E-CONTENT

Subject : Economics
Class : B.A Part I (Paper II)
Topic : Gold Exchange Standard
(स्वर्ण विनिमयमान)

By :
EKATA KUMARI
Guest Faculty
(Assistant Professor)
R.M.C Sasaram, Rohtas
Email Id :
bhardwajekata@gmail.com

स्वर्ण विनिमय मान वह मान है जिसमें आंतरिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए देश की मुद्रा को स्वर्ण में नहीं बदला जाता है। लेकिन विदेशी भुगतान के लिए देश की सरकार यह आश्वासन देती है कि देश की मुद्रा को एक निश्चित विनिमय दर पर दूसरे देश की मुद्रा से संबंधित कर दिया जाता है, जो स्वर्ण में परिवर्तनीय होती है। इस प्रकार देश की मुद्रा का संबंध स्वर्ण से अप्रत्यक्ष रूप से नहीं होता है, बल्कि अत्यन्त संबंध होता है। स्वर्ण - विनिमय मान वह मान है,

आधार पर निर्धारित किया जाता है और कभी-कभी स्वीकृत मुद्रा के आधार पर भी किया जाता है।

स्वर्ण का बाजार नियंत्रित होता है। कोई भी व्यक्ति स्वतंत्रता पूर्वक स्वर्ण का आयात-निर्यात नहीं कर सकता। इस प्रकार स्वर्ण विनिमयमान के लाभ बहुत ही ज्यादा हैं।

लाभ :-

स्वर्ण विनिमयमान बहुत ही मितव्ययी है।

मुद्रा के पीछे स्वर्ण कोष नहीं रखने के कारण स्वर्ण की बचत बहुत ज्यादा होती है।

स्वर्ण का बाजार नियंत्रण होने के कारण स्वर्ण के आयात-निर्यात पर होने वाला खर्च भी बहुत ही कम होता है।

सरकार की आमदनी बढ़ती ही चली जाती है क्यों सरकार अपने कोष का कुछ भाग विदेशी विनिमय के रूप में दूसरे देश में रखता है, जिस पर ब्याज की प्राप्ति होती रहती है।

विदेशी विनिमय के क्रय-विक्रय के बीच अंतर क लाभ सरकार को प्राप्त हो जाता है। विदेशी विनिमय दर में स्थिरता बनी रहती है।

इस प्रणाली में मुद्रा नीति पुरी तरह से लोच होती है।

अंतर्राष्ट्रीय भुगतान में काफी सुविधाजनक हो जाती है और कम से कम स्वर्ण ...

जिस मान में देश की मुद्रा को विदेशी मुद्रा बदलने की जिम्मेदारी सरकार अपने ऊपर लेती है। इस मान में विदेशी मुद्रा के पीछे स्वर्ण कोष नहीं रखा जाता लेकिन स्वर्ण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यह देश उस देश पर निर्भर करता है। जिस देश की मुद्रा के साथ इस देश की मुद्रा को जोड़ दिया गया है। इस मान के अंतर्गत कोई भी देश अपने कोष का कुछ भाग विदेशी विनिमय के रूप में उस देश में रखता है, जो बाद में चलकर स्वर्ण में परिवर्तनीय हो जाती है।

विशेषताएँ :—

देश में मुद्रा के पीछे स्वर्ण कोष नहीं रखा जाता बल्कि विदेशी विनिमय कोष रखा जाता है।

विदेशी विनिमय के क्रय - विक्रय के माध्यम से मुद्रा की मात्रा को घटाया बढ़ाया जाता है। अगर देश का भुगतान संतुलन प्रतिकूल हो, तो विदेशी विनिमय को बेच दिया जाता है, जिससे मुद्रा की मात्रा कम हो जाती है।

जब देश का भुगतान संतुलन अनुकूल हुआ तो विदेशी विनिमय के क्रय के माध्यम से मुद्रा की मात्रा बढ़ जाती है।

स्वर्ण - विनिमय मान वह मान है जिसमें मुद्रा का संबंध स्वर्ण से अप्रत्यक्ष रहता है।

विदेशी भुगतान के लिए स्वर्ण दिया जाता है।

वस्तुओं और सेवाओं की कीमत भी सोने के कीमत के आधार पर ही निर्धारित किया जाता है।
और विदेशी भुगतान भी स्वर्ण के कीमत के

के बाद ही स्वर्णमान का लाभ प्राप्त कर लिया जाता है।

आलोचनाएँ :-

स्वर्ण विनिमयमान एक जटिल मान है। इस जटिलता के कारण जनता का विश्वास इस मान पर बहुत ही कम होता है।

स्वर्ण विनिमयमान बहुत ही खर्चीला है क्योंकि इसके अंतर्गत स्वर्ण कोष खाता कम रखे जाते हैं। लेकिन कागजी खाता पर ज्यादा से ज्यादा खर्च किया जाता है।

मौद्रिक नीति भी पूरी तरह से लचीला नहीं होता और देश की मुद्रा दूसरे देश की मुद्रा पर आश्रित हो जाती है।

मौद्रिक नीति स्वतंत्रता पूर्वक काम नहीं कर पाती और मौद्रिक नीति में संकट की समस्या उत्पन्न होने का भय बना होता है।

इस मान में प्राय: सभी देश दूसरे देश के बैंकों में स्वर्ण कोष रखते हैं। अगर वह बैंक विफल हो जाए तो ऐसी स्थिती में इन देशों की काफी समस्याओं का सामना करना पर सकता है।